C-III(A) U-2. Guidance & Counselling

Q निर्देशन के अमानकीकृत परीक्षण (Non-standardized Techniques) से क्या समझते है? इनमें से एक परीक्षण का वर्णन करें।

या,

निर्देशन की तकनीकी के रूप में अवलोकन परीक्षण की व्याख्या करें।

या, अवलोकन परीक्षण क्या है? इसके प्रकार एवं गुण-दोष का वर्णन करें।

Ans अवलोकन परीक्षण किसी व्यक्ति के बारे में जानकारी प्राप्त करने का एक साधन के रूप में प्रयोग होता है। अवलोकन द्वारा विभिन्न प्रकार के व्यवहारों एवं क्रियाओं का आयोजन किया जाता है। इस विधि द्वारा व्यक्ति की प्रतिदिन की क्रियाओं एवं व्यवहारों का निश्चित समय पर विवरण इकट्ठा किया जाता है।

अवलोकन विधि के बारे में कारटर वी गुड ने लिखा है -

(i) अवलोकन विशिष्ट होता है, यह अनियमित नहीं होता।
(ii) व्यवहार का वैज्ञानिक अवलोकन नियमित होता है।
(iii) अवलोकन मात्रात्मक होत है जिसमें विशेष प्रकार के व्यवहारों की संख्या रिकॉर्ड की जाती है।
(iv) अवलोकन तत्काल रिकॉर्ड किया जाता है। इसे तत्काल नोट किया जाता है न कि स्मृति में लाकर छोड़ दिया जाता है।
(v) अवलोकन किसी प्रशिक्षित व्यक्ति द्वारा किया जाता है।
(vi) अवलोकन के परिणामों को चेक किया जा सकता है

तथा इसकी वैधता और विश्वसनीयता परखी जा सकती है।

गुड के अनुसार, "अवलोकन का उपयुक्त परिस्थितियों में व्यक्ति के प्रकट व्यवहार से संबंध होता है।"

इस प्रकार अवलोकन किसी व्यक्ति के बारे में जानकारी प्राप्त करने का महत्वपूर्ण साधन है। अवलोकन द्वारा विभिन्न प्रकार के व्यवहारों एवं क्रियाओं का विवरण प्राप्त किया जाता है। इस विधि द्वारा व्यक्ति की प्रतिदिन की क्रियाओं एवं व्यवहारों का निश्चित समय पर एवं समय-समय पर विवरण इकट्ठा किया जाता है। अवलोकन विधि न केवल एक व्यक्ति के अध्ययन में बल्कि व्यक्तियों के समूह के अध्ययन में भी लाभकारी होती है। अवलोकन विधि बहुत ही पुरानी विधि है। प्राचीनकाल में मनुष्य द्वारा अवलोकन विधि का ही अधिकतर प्रयोग किया जाता था। जैसे शिशु का व्यवहार, चिकित्सक द्वारा रोगी का निरन्तर अवलोकन इत्यादि। अब शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्रों एवं निर्देशन प्रक्रिया में भी इस विधि द्वारा व्यक्ति का अध्ययन किया जाता है।

- अवलोकन के सिद्धान्त (Principles of Observation):

अवलोकन करते समय निम्नलिखित सिद्धान्तों का अनुकरण करना चाहिये :-

(i) एक समय में एक ही विद्यार्थी का अवलोकन करना चाहिये। एक से अधिक विद्यार्थी का

अवलोकन अधिक विश्वसनीय नहीं रहता।

(ii) विद्यार्थियों का अवलोकन उनकी दैनिक गतिविधियों के माध्यम से ही किया जाना चाहिये। जैसे- कक्षा में पढ़ते समय, खेल क्षेत्र में, एक कक्षा से दूसरी कक्षा में जाते समय।

(iii) अवलोकन करने की अवधि लम्बी होनी चाहिये। कम समय तक किया गया अवलोकन अधिक विश्वसनीय नहीं होता।

(iv) अवलोकन करते समय अवलोकनकर्ता का ध्यान केवल विद्यार्थी तक सीमित नहीं होना चाहिये। उन परिस्थितियों का अवलोकन भी करना चाहिये जिनमें व्यक्ति जो या विद्यार्थी को कार्य करना होता है।

- अवलोकन के लाभ (Advantages of observation):-

(i) अवलोकन विधि व्यक्तिगत और समूह, दोनों परिस्थितियों में ही लाभदायक है।

(ii) अवलोकन विधि का प्रयोग सभी व्यक्तियों द्वारा संभव है। इस विधि के लिये विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं पड़ती। थोड़े से प्रशिक्षण द्वारा सभी अध्यापक इस विधि का प्रयोग कर सकते हैं।

(iii) अवलोकन विधि छोटे बच्चों के अध्ययन में अधिक उपयोगी है। छोटे बच्चों का अवलोकन सरल होता है। छोटे बच्चों में इसकी उपयोगिता का कारण और भी है कि इन बच्चों का भाषा ज्ञान भी सीमित ही होता है। ऐसी अवस्था में बच्चे अपने भावों का प्रदर्शन क्रियाओं द्वारा ही कर सकते हैं। उनकी क्रियाओं का अवलोकन करके ही उन्हें समझा जा सकता है।

(iv) व्यक्ति या विद्यार्थी का अवलोकन स्वाभाविक परिस्थिति में किया जा सकता है। विद्यार्थी या बच्चा सभी परिस्थितियों में कार्य करता है या खेलता है। इन परिस्थितियों में ही इन बच्चों का अवलोकन सही ढंग से किया जा सकता है।

(v) अवलोकन द्वारा व्यक्ति की भावात्मक एवं सामाजिक प्रतिक्रियाओं का अवलोकन सरलता से किया जा सकता है।

- अवलोकन की सीमाएँ या दोष (Limitations or Demerits of observation):- अवलोकन की सीमाएँ या दोष निम्नलिखित हैं:-

(i) कई बार अवलोकन कार्य पक्षपातपूर्ण हो जाता है क्योंकि कक्षा में कई विद्यार्थी अवलोकन करने वाले अध्यापक को अनुचित या उचित तरीकों से प्रभावित कर लेते हैं। ऐसी परिस्थिति में अध्यापक विद्यार्थी के गुणों पर ही केन्द्रित रहते हैं। उसकी त्रुटियों की ओर ध्यान नहीं देते।

(ii) अवलोकन में समय बहुत अधिक खर्च होता है। कम समय तक अवलोकन अधिक विश्वसनीय नहीं होता। अतः इसकी विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए अवलोकन अधिक लम्बी अवधि के लिए किया जाना चाहिये।